1

महात्मा गांधी : सत्य एवं अहिंसा, न्यासिता, मार्क्स से तुलना

[MAHATMA GANDHI : SATYA AND AHIMSA, TRUSTEESHIP, COMPARISON WITH MARX]

महात्मा गांधी आधुनिक भारत के उन महान् विचारकों में सबसे प्रमुख थे जिन्होंने भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक परम्पराओं से प्रेरणा ग्रहण की और अपने विचारों को तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक स्थिति के अनुरूप ढाला। गांधी अपने युग के महान् नेता थे। उन्होंने सत्य और अहिंसा के सनातन सिद्धान्तों का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग कर मानवता का मार्गदर्शन किया। उन्होंने समस्त भारत में राष्ट्रीय चेतना जागृत की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को उन्होंने प्रभावशाली जन-आन्दोलन के रूप में संगठित किया। संसार के सबसे अधिक शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को भारत से उखाड़ फेंकने के लिए उन्होंने अहिंसा एवं सत्याग्रह को अस्त्र के रूप में प्रयोग किया। भारत के स्वाधीनता संघर्ष का उन्होंने लम्बे समय तक नेतृत्व किया और अन्त में देश को स्वतन्त्रता दिलायी। इसीलिये उन्हें भारत का 'राष्ट्रपिता' कहा जाता है। 1920 से 1947 तक गांधीजी ने भारत का एकछत्र नेतृत्व किया। इस काल में भारतीय जीवन के सभी पक्षों राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व धार्मिक पहलुओं पर उनके महान् व्यक्तित्व की छाप पड़ी। अतः इस काल को 'गांधी युग' कहा जाता है। गांधीजी एक राजनीतिज्ञ ही नहीं वरन् एक समाज सुधारक, दार्शनिक, शिक्षाविद्, आध्यात्मिक पुरुष एवं महान् विचारक भी थे। मूल रूप में, महात्मा गांधी एक आध्यात्मिक और धार्मिक सन्त थे। उनकी धर्म सम्बन्धी धारणा पारलौकिक नहीं वरन् लौकिक थी और वे मानवता की सेवा को ही वास्तविक धर्म मानते थे, किन्तु उस समय की परिस्थितियों के कारण उन्हें राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेना पड़ा। स्वयं गांधीजी ने एक बार **पोलक** से कहा था, "मैंने राजनीति का चोगा पहन रखा है, किन्तु हृदय से एक धार्मिक पुरुष हूं।" उन्होंने 1929 में **अरुण्डेल** को लिखा था, "मेरा झुकाव राजनीति की ओर नहीं, धर्म की ओर है।"

गांधीजी यह मानते थे कि मानव और मानव जाति की सभी समस्याएं नैतिक समस्याएं हैं। मनुष्य को सभी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कार्यों को अपनी अन्तरात्मा की

आवाज के आधार पर करना चाहिए। व्यक्ति जब अपनी आत्मा की आवाज को स्वार्थवश कुचल देता है तो उसका पशुत्व प्रबल हो जाता है और सभी समस्याओं के प्रति उसके विचार दूषित हो जाते हैं। वे राजनीति और नैतिकता को एक ही सिक्के के दो पहलू मानते थे। नैतिकता के जिन सामान्य सिद्धान्तों को व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन पर लागू किया जा सकता है, उनसे राजनीति भी मुक्त नहीं है। अतः राजनीति से बुराइयों को दूर करने के लिए राजनीतिक कार्यों का संचालन मानवीय दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। गांधीजी का समस्त दर्शन राजनीति तथा समाज के प्रति उनके आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण में निहित है।

महात्मा गांधी का जीवन-परिचय (Life-Sketch of Mahatma Gandhi)

गांधीजी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 में काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। उनका पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी था। उनके पिता राजकोट रियासत के दीवान थे। उनकी माता एक साधु प्रकृति की अत्यन्त धार्मिक महिला थीं और उनका बालक गांधी पर बहुत प्रभाव पड़ा। मोहनदास स्कूल में एक साधारण योग्यता के, किन्तु समय के बहुत पाबन्द और शिक्षकों के आज्ञाकारी छात्र थे। पहले उन्होंने गुजराती स्कूल में और बाद में अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। सन् 1883 में 13 वर्ष की आयु में उनका विवाह कस्तूरबा के साथ कर दिया गया। मोहनदास जब 16 वर्ष के थे तो उनके पिता का देहान्त हो गया। 17 वर्ष की आयु में उन्होंने मैट्रिक पास की और 1888 में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे इंग्लैण्ड चले गये। वहां रहकर उन्होंने खान-पान, वेश-भूषा और रहन-सहन में अंग्रेजियत अपना ली थी, किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अंग्रेजियत को त्यागकर भारतीयता को अपना लिया। इंग्लैण्ड में ही गांधीजी ने अंग्रेजी में अनुवादित गीता का अध्ययन किया और इससे उनकी धार्मिक प्रवृत्ति पुष्ट हुई।

1891 में विधि की शिक्षा ग्रहण कर गांधीजी भारत लौटे और वकालत करना प्रारम्भ किया। स्वभाव से शर्मीले एवं लज्जाशील होने के कारण वकालत के व्यवसाय में वे बहुत अधिक सफल नहीं हुए। काठियावाड़ तथा बम्बई में थोड़े दिनों तक वकालत करने के बाद एक धनवान गुजराती मुसलमान के मुकदमे की पैरवी करने के लिए वे दक्षिणी अफ्रीका गये। दक्षिणी अफ्रीका में काले गोरे का भेद और अपने देशवासियों की दयनीय स्थिति देखकर उन्हें बहुत आघात लगा और उनके हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करने हेतु उन्होंने वहीं रहने का निश्चय किया। एक लम्बे अर्से तक गांधीजी भारतीयों के साथ वहां रहे और सत्याग्रह एवं अहिंसा के आधार पर गोरी सरकार से संघर्ष किया। भारतीयों को अफ्रीका में कुली कहकर पुकारा जाता था, अतः गांधीजी को भी वहां कुली बेरिस्टर कहा जाने लगा। वहां भारतीयों के साथ कई भेद-भाव बरते जाते थे। उन्हें रेल के प्रथम दर्जे के डिब्बे में बैठने की इजाजत नहीं थी। एक बार गांधीजी प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठकर जा रहे थे तो उनका सामान बाहर फेंक दिया गया और उन्हें धक्के देकर उतार दिया गया। इन सभी बातों से गांधीजी बहुत क्षुब्ध हुए। दक्षिणी अफ्रीका की सरकार के अन्यायों के विरुद्ध लड़ने के लिए गांधीजी ने '**नेपाल भारतीय कांग्रेस**' संगठन का गठन किया। वहां वे दो बार जेल गये और दो बार क्रमशः 7 व 14 दिनों का व्रत भी किया। उनके संघर्ष से वहां की गोरी सरकार को झुकना पड़ा तथा भारतीयों को मानवीय अधिकार देने पड़े। संघर्ष के नये तरीके अहिंसा,

उपवास और सत्याग्रह के कारण गांधीजी की ख्याति शीघ्र ही चारों ओर फैल गयी। इसके बाद गांधीजी इंग्लैण्ड चले गये जहां उनकी भेंट गोपालकृष्ण गोखले से हुई और वे उनसे बहुत प्रभावित हुए।

1914 में गांधीजी भारत लौट आये और उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। इस समय गांधीजी को अंग्रेजों की न्यायप्रियता में पूरा विश्वास था, इसलिये उन्होंने भारतीय जनता को बिना किसी शर्त के ब्रिटिश सरकार को सहायता देने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी ने भारत में अपना राजनीतिक जीवन चम्पारन के सत्याग्रह से प्रारम्भ किया और इस क्षेत्र में नील की खेती करने वाले कृषकों पर गोरे जमींदारों के अत्याचारों की जांच करने के लिए सरकार को एक कमीशन नियुक्त करने को बाध्य किया। इसके एक वर्ष बाद खेड़ा जिले में 'कर न दो आन्दोलन' और अहमदाबाद के मजदूर आन्दोलन में उन्होंने सफलता प्राप्त की। गांधीजी ने साबरमती के तट पर अहमदाबाद के निकट अपना आश्रम बनवाया। इस समय तक गांधीजी एक राजभक्त भारतीय थे, किन्तु 1918 में ब्रिटिश सरकार द्वारा 'रौलैट एक्ट' पास किये जाने और अप्रैल 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के कारण आपका ब्रिटिश सरकार की न्यायप्रियता में विश्वास नहीं रहा। इसी समय खिलाफत के प्रश्न पर भारत का मुसलमान वर्ग भी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध था, अतः हिन्दू-मुस्लिम एकता में विश्वास रखने वाले महात्माजी ने इसे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ करने का उपयुक्त अवसर समझा और इसी समय उन्होंने सरकार के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। इस आन्दोलन का बहुत प्रसार हुआ, किन्तु धीरे-धीरे यह हिंसक रूप धारण करने लगा। अतः 4 फरवरी, 1922 के चौरी-चौरा काण्ड से दुःखी होकर गांधीजी ने इस आन्दोलन को स्थगित कर दिया। 4 मार्च, 1922 को गांधीजी को राजद्रोह के अपराध में गिरफ्तार कर 7 वर्ष की सजा दी गयी, किन्तु जेल में उनका स्वास्थ्य खराब होने के कारण 5 फरवरी, 1924 को उन्हें जेल से मुक्त कर दिया गया। इसी वर्ष वे कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये।

सन् 1930 में गांधीजी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया। सन् 1942 में आपने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' चलाया जिसमें **'करो या मरो'** (Do or Die) का नारा दिया। गांधीजी को इस कार्य में सफलता नहीं मिली और उन्हें बन्दी बना लिया गया। सन् 1944 में जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता समस्या के समाधान के लिए प्रयास किया। इसी समय उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबा का निधन हो गया। मोहम्मद अली जिन्ना और मुस्लिम लीग ने भारत से पृथक् पाकिस्तान निर्माण की मांग रखी। बहुत समझाने पर भी जिन्ना पाकिस्तान के निर्माण की बात पर अड़े रहे। गांधीजी देश के बंटवारे के विरुद्ध थे, किन्तु ब्रिटिश नीति, मुस्लिम लीग की हठधर्मिता और साम्प्रदायिक दंगों के कारण उन्हें विभाजन स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

गांधीजी के प्रयत्नों के कारण 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ। गांधीजी सदैव रचनात्मक कार्यों में लगे रहे और साम्प्रदायिक तनावों को कम करने एवं दलितों के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहे। 30 जनवरी, 1948 को जब गांधीजी दिल्ली में संध्याकालीन प्रार्थना सभा के लिए जा रहे थे तो नाथूराम गोडसे नामक युवक ने गोली मार कर उनकी हत्या कर दी और राम-राम कहते हुए उन्होंने शरीर त्याग दिया। उनकी मृत्यु पर महान्

वैज्ञानिक **आइन्सटाइन** ने कहा था, "आगे आने वाली पीढ़ियां शायद ही यह विश्वास कर सकेंगी कि उन जैसे हाड़-मांस का पुतला कभी इस भूमि पर पैदा हुआ था।" **डॉ. स्टेन्ले जोन्स** ने लिखा है, "हत्यारे ने महात्मा गांधी की हत्या करके उन्हें अमर बना दिया। मृत्यु से वे अपने जीवन की अपेक्षा अधिक बलशाली हो गये।"

गांधीजी की कृतियां

गांधीजी ने अपने विचारों को समय-समय पर कई लेखों, पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के माध्यम से प्रकट किया। '**हिन्दू स्वराज**' तथा '**मेरे सत्य के प्रयोग**' में उन्होंने अपने विचारों का प्रतिपादन किया। उनकी अन्य रचनाएं हैं—'शान्ति और युद्ध में अहिंसा', 'नैतिक धर्म', 'सत्याग्रह', 'सत्य ही ईश्वर है', 'सर्वोदय', 'साम्प्रदायिक एकता' एवं 'अस्पृश्यता निवारण' आदि। आपने अफ्रीका में 'इण्डियन ओपीनियन' और भारत में 'यंग इण्डिया', 'हरिजन', 'नवजीवन', 'हरिजन सेवक', 'हरिजन बन्धु' आदि पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया।

गांधीजी के दर्शन की पृष्ठभूमि : (गांधीवादी दर्शन के प्रेरणा स्त्रोत)

गांधीजी के जीवन और दर्शन को अनेक महापुरुषों, धर्मों एवं धार्मिक ग्रन्थों ने प्रभावित किया। उन पर उनकी माता के पवित्र जीवन एवं पिता की सादगी और सदाचार का अमिट प्रभाव पड़ा। गांधीजी को प्रभावित करने में जिन पुस्तकों, धर्मों एवं व्यक्तियों की प्रमुख भूमिका रही, वे इस प्रकार हैं :

(1) **गीता**—गांधीजी के जीवन पर रामायण एवं महाभारत के अतिरिक्त गीता का भी विशेष प्रभाव पड़ा। उन्होंने लिखा है, "जब मैं संशयों और निराशाओं से घिरा होता हूं, और जब मुझे क्षितिज पर एक भी प्रकाश-रश्मि नहीं दिखायी देती, तब मैं भगवद्गीता की ओर मुड़ता हूं और मुझे आश्वासन के लिए एक न एक श्लोक मिल जाता है और मैं तुरन्त परेशान करने वाली मुसीबतों में मुस्कराने लगता हूं। मेरा जीवन बाहरी दुःखों से परिपूर्ण रहा है और अगर उन्होंने मेरे ऊपर कोई अमिट तथा दृष्टिगोचर होने वाला असर नहीं डाला है, तो मैं उसके लिए भगवद्गीता की शिक्षा के प्रति आभारी हूं।"

(2) **कुरान**—गांधीजी धर्म की दृष्टि से उदार दृष्टिकोण रखते थे। वे हिन्दू धर्म ग्रन्थों की भांति मुस्लिम धर्म ग्रन्थों का भी आदर करते थे। उन्होंने कुरान का भी अध्ययन किया और पाया कि उसमें भी प्रेम, सत्य, अहिंसा तथा भाईचारे की भावना पायी जाती है।

(3) **बाईबिल**—गांधीजी को बाईबिल ने भी प्रभावित किया। "शैलोपदेश" (Sermon on the mount) वाले अध्याय को पढ़कर महात्माजी को जीवन के मूल्यों का ज्ञान हुआ और उससे प्रभावित होकर उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया, विश्वबन्धुत्व तथा दैवी परिवार की प्रेरणा उन्हें बाईबिल से ही मिली।

(4) **जैन, बौद्ध एवं कनफ्यूसियस धर्म**—गांधीजी ने अहिंसा के विचार जैन और बौद्ध धर्म से भी ग्रहण किये। बौद्ध भिक्षुओं ने दस शिक्षा पदों में पहला स्थान अहिंसा को दिया था। गांधीजी बुद्ध के इन विचारों से बहुत प्रभावित हुए कि मनुष्य को क्रोध को प्रेम से जीतना चाहिए, बुराई को अच्छाई से, लोभी को उदारता से और झूठ को सत्य से जीतना चाहिए। चीन का कन्फ्यूसियसवाद भी प्रेम और अहिंसा पर बल देता है। इन सभी धर्मों का सामूहिक प्रभाव गांधीजी के क्रिया-कलापों का प्रेरणा स्त्रोत बना।

(5) **टॉल्सटाय**—गांधीजी पर टॉल्सटाय की रचना "*The Kingdom of God is within you*" का विशेष प्रभाव पड़ा। उन्होंने स्वीकार किया कि उनके अहिंसावादी विचार इस पुस्तक के पढ़ने से और भी दृढ़ हुए। वे टॉल्सटाय के इस विचार से भी बहुत प्रभावित हुए कि अपने विचारों को किसी अन्य पर थोपना मानसिक हिंसा है।

(6) **जॉन रस्किन**—गांधीजी जॉन रस्किन की पुस्तक '*Unto this Last*' से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने '**सर्वोदय**' नाम से इस पुस्तक का गुजराती में अनुवाद कर दिया। इस पुस्तक से उन्होंने तीन बातें सीखीं—(i) एक व्यक्ति का हित सभी व्यक्तियों के हित में निहित है, (ii) एक वकील का कार्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना एक नाई का, क्योंकि सभी व्यक्तियों को अपनी आजीविका कमाने का समान अधिकार है, (iii) शारीरिक श्रम करने वाले किसान या कारीगर का जीवन ही वास्तविक जीवन है। गांधीजी ने रस्किन से प्रभावित होकर बुद्धि की अपेक्षा चरित्र पर अधिक बल दिया, आत्म-बल को सर्वोच्च स्थान दिया, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन में धर्म और नैतिकता को महत्व दिया। पूंजीपतियों को ट्रस्टी मानने की धारणा उन्होंने रस्किन से ही ग्रहण की।

इनके अतिरिक्त गांधीजी पर अराजकतावादी विचारक हेनरी डेविड थोरो, हक्सले आदि कई विचारकों का भी प्रभाव पड़ा। गांधीजी के बारे में प्रो. एस. एन. बिसारिया ने कहा है, "गांधीजी का दर्शन एक ऐसा दर्शन है जिसमें विश्व के सारे कोनों के सन्तों की शिक्षाएं आकर सम्मिलित हो गयी हैं और जिनकी उन्होंने अपनी ही व्याख्या दी है। वास्तव में, गांधीवाद शाश्वत सत्य की पुनर्व्याख्या के अतिरिक्त और अधिक कुछ भी नहीं है। उन्होंने अपनी प्रेरणा बुद्धि तथा विचारों के विभिन्न कूपों से ली है और उनको आधार मानकर एक नवीन तथा विचित्र दर्शन की सृष्टि की है।"